दैनिक दबंग दुनिया
निष्पक्ष नज़र, निष्पक्ष खबर

मानसिक थकान दूर करनेवाले चित्रों की प्रदर्शनी

ताजी हवा का झोंका जंगल के हर मूड को निहारें

खान नासेर जमाल ▸ मुंबई

पेड़ पौधे प्राण वायु का संचार करते हैं, यह एक वैज्ञानिक तथ्य है। अगर आप इस सच्चाई को जानना चाहते हैं तो जहांगीर आर्ट गैलरी की सैर कर आएं। वहां दूसरी मंजिल पर नागपुर की चित्रकार श्रीमती प्रज्ञा रहाने बेसेकर के चित्रों की नुमाइश सजी है। कैनवास पर एक्रिलिक में सिर्फ पेड़-पौधे और फूलों को चित्रित किया गया है। गैलरी का पूरा नजारा किसी गुलशन की तरह है। जिधर नजर जाए फूल महकते से लगते हैं। माहौल को रूमानी बनाने के लिए पेड़ों की शाखों से झांकता चांद भी है। कहीं वह कमान की तरह तना है तो कहीं नीले आकाश के माथे पर गोल बिंदिया की तरह चमक रहा है।

श्रीमती बेसेकर ने जंगल के हर मूड को अपने फ्रेम में बांधा है। घुमड़ती घटाएं हैं तो बहार के चटक रंग भी है। बाल बिखराए बाला भी नजर आती है जिसके इर्द गिर्द विरह के रंगों का संयोजन माहौल को गमगीन बनाता है। बच्चा गोद में लिए मां भी है। उड़ती पतंगे भी नजर आती हैं। जहां उन्होंने बड़े-बड़े कैनवास सजाए हैं, वहीं छोटे आकार के चित्र भी बनाए हैं, जो छोटे कमरों के लिए उपयुक्त हैं।

इस प्रकार से श्रीमती बेसेकर ने एक उपवन को प्राण देकर मुंबई वासियों को अवसर दिया है कि वे ताजी हवा के झोंके खाने जहांगीर आर्ट गैलरी पधारें। जब हमने उनसे आकार को लेकर बात की तो उन्होंने बताया कि चित्रकार के मन में पहले कोई विचार आता है। उसके बाद चिंतन आरंभ होता है और जब कल्पना को कैनवास पर उतारने की बात आती है तब प्रत्येक विषय अपना आकार और माध्यम स्वयं तय करता है। इसमें चित्रकार का अपना कोई दखल नहीं होता। रचनात्मक प्रक्रिया का यह एक भाग है। आप एक्रिलिक में ही क्यों पेंट करती हैं?

इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि दूसरे माध्यम बारीक काम में सहायक नहीं बनते। उन्होंने अपनी एक पेंटिंग बताई जो आइल पेंट में थी। तुलना करने पर महसूस हुआ कि यह माध्यम उनके लिए नहीं है। वे जब बारीक फूल बनाती हैं तो एक्रिलिक में वे बोलने लगते हैं।

मुंबई की जीवन शैली में मानसिक तनाव बहुत है। अगर आप अपने तनाव को घटाना चाहें तो यह प्रदर्शनी अवश्य देखें। यह आपके अवसाद को खत्म कर देगी।